इकाई 2 : राजनीतिक भूगोल के अध्ययन के दृष्टिकोण (Approaches to the Study of Political Geogrophy)

इकाई की रूपरेखा

2.0 उद्देश्य

2.1 प्रस्तावना

2.2 शक्ति विश्लेषण दृष्टिकोण

2.2.1 प्राकृतिक वातावरण

2.2.2 परिवहन एवं संचार

2.2.3 कच्चा, अर्द्ध–कच्चा व निर्मित सामान

2.2.4 जनसंख्या

2.2.5 राजनीतिक संरचना

2.3 ऐतिहासिक दृष्टिकोण

2.4 संरचना सम्बन्धी दृष्टिकोण

2.5 कार्य सम्बन्धी दृष्टिकोण

2.5.1 आन्तरिक पक्ष

2.5.2 बाह्य पक्ष

(i) क्षेत्रीय सम्बन्ध

(ii) आर्थिक सम्बन्ध

(iii) राजनीतिक सम्बन्ध

(iv) सामरिक सम्बन्ध

2.6 क्षेत्र एकरूपता का सिद्धान्त

2.6.1 क्षेत्र एकरूपता सिद्धान्त द्वारा बंगलादेश का उद्भव विश्लेषण

2.7 तन्त्र उपागम दृष्टिकोण

2.8 सारांश

2.9 शब्दावली

2.10 संदर्भ ग्रन्थ

2.11 बोध प्रश्नों के उत्तर

2.12 अभ्यासार्थ प्रश्न

2.0 उद्देश्य

इस इकाई का अध्ययन करने के उपरान्त आप समझ सकेगें कि :

- राजनीतिक भूगोल के अध्ययन के विभिन्न दृष्टिकोण,
- शक्ति विश्लेषण दृष्टिकोण,

- ऐतिहासिक दृष्टिकोण,
- संरचना सम्बन्धी दृष्टिकोण,
- कार्य सम्बन्धी दृष्टिकोण,
- क्षेत्र एकरूपता का सिद्धान्त व उसका महत्व,
- तन्त्र उपागम दृष्टिकोण,
- तथा राजनीतिक शक्तियाँ तथा राजनीतिक व्यवस्था का विवरण ।

2.1 प्रस्तावना (Introduction)

राजनीतिक भूगोल के विकास– क्रम से स्पष्ट है कि अनेकानेक विचारकों एवं भूगोलवत्ताओं ने अपने विचारों द्वारा इसको गति प्रदान की तथा इसको विशिष्ट विषय के रूप में विकसित किया । यद्यपि आधुनिक राजनीतिक भूगोल का वास्तविक प्रारम्भ 19वीं शताब्दी में हुआ, किन्तु इसमें सैद्धान्तिक निरूपण का लगभग अभाव रहा । यही कारण है कि प्रो.ए.ई. मूडी ने इसके सम्बन्ध में लिखा है – राजनीतिक भूगोल कभी निश्चित विज्ञान नहीं हो सकता था इसकी समस्याओं के समाधान को शुद्ध विज्ञान के समान ग्रहणशील मानना एक भूल होगी । सैद्धान्तिक निरूपण के अभाव के कारण अनेक भूगोलवत्तओं ने चिन्ता व्यक्त की एवं इसके लिए अनेक दृष्टिकोण प्रस्तुत किये, जिनको आधार मानकर राजनीतिक भूगोल का विधिवत् अध्ययन किया जा सकता है । यह कार्य मुख्यतया विगत 40 वर्षो में विशेषकर हुआ । इसमें सबसे महत्वपूर्ण कार्य रिचार्ड हार्टशोर्न (Richard Hartshorne) एवं स्टीफन बी. जोन्स (Stephen B. Jones) का है ।

सामान्यतया राजनीतिक भूगोल के अध्ययन के छः निम्नलिखित सम्मुख आते है । इनका अध्ययन राजनीतिक भूगोल के समुचित ज्ञान के लिये अपेक्षित हैं–

(1) शक्ति विश्लेषण दृष्टिकोण (The Power Analysis Approach)

(2) ऐतिहासिक दृष्टिकोण (The Historical Approach)

(3) संरचना सम्बन्धी दृष्टिकोण (The Morphological Approach)

(4) कार्य सम्बन्धी दृष्टिकोण (The Functional Approach)

(5) क्षेत्र एकरूपता का सिद्धान्त (Unfield Field Theory)

(6) तन्त्र उपागम दृष्टिकोण (System Approach)

2.2 शक्ति विश्लेषण दृष्टिकोण (The Power Analysis Approach)

शक्ति विश्लेषण दृष्टिकोण अधिकांशतः राजनीतिज्ञों द्वारा अपनाई हुई विधि है। इसमें अनेक विचारक भौगोलिक तथ्यों को भी शक्ति तत्व के रूप में स्वीकार करते हैं । वे राष्ट्रीय शक्ति के पाँच स्वरूप अर्थात भौगोलिक, आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक एवं सैनिक वर्णित करते हैं । भौगोलिक तथ्यों जैसे – स्थिति, विस्तार एवं

आकार, कृषि युक्त एवं अकृषियुक्त क्षेत्र, जलवायु का प्रभाव न केवल भूमि के उपजाऊपन पर, अपितु मानव शक्ति एवं क्षमता पर और राष्ट्रीय संसाधनों पर पड़ता हैं।

इस प्रकार के दृष्टिकोण को एक सीमित भौगोलिक दृष्टिकोण कहा जायेगा । एक सम्पूर्ण भौगोलिक दृष्टिकोण के लिये आवश्यक है कि एक उपयुक्त तालिका भौगोलिक तथ्यों की वर्णित की जाए और उन तथ्यों को राजनीतिक घटनाक्रम से सम्बन्धित किया जाना आवश्यक हैं । इस प्रकार की तालिका एस.बी. कोहेन (S.B. Cohen) ने निम्नांकित प्रकार से वर्णित की जिसके प्रमुख तथ्य हैं :

बोध प्रश्न

1. राजनीति भूगोल के अध्ययन के दृष्टिकोण कितने हैं?
2. एस.बी. कोहेन ने शक्ति विश्लेषण दृष्टिकोण को कितने भागों में वर्णित किया हैं?
3. ए.ई. मूडी की पुस्तक का नाम क्या हैं?
4. रचार्ड हार्टशोर्न किस देश का भूगोलवेत्ता था?
   दी अर्थ एण्ड स्टेट पुस्तक के लेखक का नाम क्या हैं?
5. कार्य सम्बन्धी दृष्टिकोण का जनक कौन हैं?

2.2.1 **प्राकृतिक वातावरण**

इसके अन्तर्गत स्थिति, आकार, विस्तार, धरातल, जलवायु, मिट्टी, प्राकृतिक वनस्पति, आदि सम्मिलित की जाती है । इसके उदाहरणस्वरूप एक तथ्य इस प्रकार हो सकता है कि नार्वे की अधिक लम्बी तट रेखा एवं मछली पकड़ने की सुविधा तथा दूसरी ओर कृषि की दृष्टि से निर्धनता ने यहाँ के व्यापारिक एवं राजनीतिक स्वरूप को प्रभावित किया है ।

2.2.2 **परिवहन एवं संचार**

इसमें विभिन्न परिवहन के साधनों का स्वरूप न केवल यात्री वाहक रूप में अपितु सामग्री का अध्ययन सम्मिलित किया जाता है । इसी प्रकार संचार के साधनों से विचार अभिव्यक्ति होती है । ये राष्ट्रीयता एवं राष्ट्रीय एकता के प्रमुख साधन होते हैं ।

2.2.3 **कच्चा, अर्द्ध–कच्चा एवं निर्मित सामग्री**

एक देश के प्रमुख संसाधन होते हैं । इनका न केवल वर्तमान में अपितु भविष्य की सम्भावनाओं के दृष्टिकोण से, अध्ययन होना आवश्यक है । इनका अध्ययन एवं प्रभाव समय एवं स्थान के सन्दर्भ में होना चाहिये, क्योंकि ये राष्ट्रीय शक्ति को अत्यधिक प्रभावित करते हैं ।

2.2.4 **जनसंख्या**

राष्ट्रीय शक्ति एवं सामर्थ्य को प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष दोनों प्रकार से प्रभावित करती है । जनसंख्या के अन्तर्गत उनकी गुणात्मक एवं भावनात्मक विशेषता, जैसे तकनीकी ज्ञान, धर्म आदि को भी ध्यान में रखना आवश्यक हैं ।

2.2.5 **राजनीतिक संरचना**

इसके अन्तर्गत प्रशासकीय स्वरूप आदर्श एवं उद्देश्यों का राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय परिवेश में अध्ययन होना आवश्यक हैं ।

उपर्युक्त तथ्यों के आधार पर सांख्यिकी सूचनायें प्राप्त करना साल, किन्तु उनके आधार पर मूल्यांकन हेतु अंक सीमा निर्धारण अत्यधिक जटिल कार्य हैं । क्योंकि किसी एक तत्व को प्रधानता देने या कमी करने से परिणाम में अन्तर आ जायेगा । जैसे यदि जनसंख्या को अधिक महता दी गई तो चीन और भारत का स्थान सर्वोच्च हो जायेगा । यही तथ्य शहरी जनसंख्या के प्रतिशत, इस्पात उत्पादन, कृषि युक्त क्षेत्र आदि के लिसे सत्य हैं । इससे यह तात्पर्य नहीं है कि उर्पयुक्त तथ्यों के आधार पर शक्ति विश्लेषण नहीं किया जाए अपितु इससे प्राप्त परिणाम तुलनात्मक अध्ययन के लिये अत्यन्त उपयोगी सिद्ध हो सकते हैं ।

2.3 ऐतिहासिक दृष्टिकोण (The Historical Approach)

राजनीतिक भूगोल मे ऐतिहासिकता का अध्ययन भी महत्व रखता है । इसकी उपयोगिता हार्टशोर्न, जोन्स, व्हिट्लसी आदि विचारकों ने स्वीकार की । इसका प्रमुख उद्देश्य भूतकाल की घटनाओं का अध्ययन करके, न केवल प्राचीन परिस्थितियों से अवगत होना हैं, अपितु वर्तमान समस्याओं के समाधान का मार्ग भी प्रशस्त होता है । एक राज्य का केन्द्रीय स्थल से क्रमिक विकास, सीमान्त प्रदेशों पर आक्रमण, उपनिवेश का विस्तार आदि अनेक समस्याओं को ऐतिहासिक विवेचन से ही समझा जा सकता है इस अध्ययन में विशेष सुविधा मानचित्र पर अंकन की हे, क्योंकि राज्यों का विस्तार सरलता से मानचित्र पर प्रदर्शित किया जा सकता है । ऐतिहासिक दृष्टिकोण से व्हिट्लसी ने फ्रांस का विवरण अपनी पुस्तक **दी अर्थ एण्ड स्टेट** में प्रस्तुत किया है । इसमें उन्होने फ्रांस के उद्भव एवं विकास का वर्णन करते उसका सफलतापूर्वक मानचित्र पर प्रदर्शित भी किया है । साथ ही उन्होनें उन सभी तत्वों को विशद विवेचन प्रस्तुत किया जो पृथ्वी और राज्यों के सम्बन्धों को प्रभावित करते हैं ।

2.4 संरचना सम्बन्धी दृष्टिकोण (The Morphological Approach)

राजनीतिक भूगोल के अध्ययन में राज्य का स्थान सर्वोच्च है, अतः कुछ विचारकों का मत है कि राज्य की सरंचना का अध्ययन ही राजनीतिक भूगोल में प्रमुखता रखता है । सरंचना सम्बन्धी दृष्टिकोण के प्रतिपादकों में हार्टशोर्न भी है । इस

दृष्टिकोण के अन्तर्गत राजनीतिक क्षेत्र का अध्ययन उनके विविध आकार, प्रारूप और संरचना के आधार पर किया जाता है । प्रत्येक राज्य की राजधानी एवं उद्भव क्षेत्र, सीमायें, प्रान्तीय विभाग, सधन एवं अल्प बसे भाग होते हैं जिनका तुल्नात्मक विश्लेषण किया जा सकता है । राज्य के प्रारूप को उसकी स्थिति, आकार तथा विस्तार के रूप में व्यक्त किया जाता है । इसी प्रकार संरचना (Structure) शब्द मुख्यतया राज्य के क्षेत्रीय अंगो जैसे – जनसंख्या, आर्थिक क्षेत्र, राजधानी, सीमायें आदि के लिये प्रयुक्त होता है । अत: राजनीतिक भूगोल में संरचना दृष्टिकोण के अन्तर्गत प्रारूप एवं संरचना दोनों का विस्तृत विवेचन किया जाता है । इस प्रकार विवेचन से राज्य के स्वरूप का ज्ञान हो जाता है तथा विश्व की राजनीतिक इकाइयों का तुलनात्मक अध्ययन सहज हो जाता है ।

स्वयं हार्टशोर्न ने ही इस दृष्टिकोण में परिवर्तन प्रस्तुत किया है। । उन्होनें इस प्रकार के वर्णन को स्थिर एवं आलस्यपूर्ण व्यक्त किया हैं क्योकि इसमें राज्य के विभिन्न अंग तथा उपांगों का मात्र वर्णन प्रस्तुत किया जाता है, उनके कार्य को विस्मृत कर दिया जाता है, जबकि कार्य वे ही स्वरूप प्रस्तुत करते हैं जिन पर राज्य निर्भर करता है । अत: संरचना का वर्णन राज्य के विभिन्न अवयवों को समझने के लिए होना चाहिए, किन्तु वास्तविक परिणाम कार्यो के अध्ययन एवं विवेचन से ही सम्भव है ।

2.5 कार्य सम्बन्धी दृष्टिकोण (The Functional Approach)

राजनीतिक भूगोल के अध्ययन में व्यवस्थित स्वरूप के अभाव को दूर करने की दिशा मे रिचार्ड हार्टशोर्न का स्थान सर्वोच्च है । उन्होनें राजनीतिक भूगोल में एक नवीन दृष्टिकोण प्रस्तुत किया जो कार्य सम्बन्धी दृष्टिकोण के नाम से विख्यात है । इसका प्रतिपादन उन्होनें अमेरिकन भूगोलवेत्ता परिषद् के अध्यक्षीय भाषण के रूप में 7 अप्रैल, 1950 में किया तथा इसका प्रकाशन परिषद की पत्रिका में हुआ । इसका मूलाधार था एक क्षेत्र का राजनीतिक इकाई के रूप में कार्य करते रहना । यह सिद्धान्त राजनीतिक भूगोल को नवीन दिशा प्रदान करता है । यहीं नही, अपितु स्वयं हार्टशोर्न ने इसको आर्थिक भौगोलिक राजनीतिक भूगोल के रूप में सम्बोधित किया है । अत: इसका सम्पूर्ण विवेचना अपेक्षित है । हार्टशोर्न के कार्य सम्बन्धी दृष्टिकोण को निम्नांकित रूप में प्रस्तुत किया हैं :–

2.5.1 **आन्तरिक पक्ष**

राजनीतिक भूगोल की मूल समस्या है राज्य को कार्य के आधार पर प्रस्तुत करना । क्षेत्र, जनसंख्या एवं राजनीतिक इकाई राज्य के अभिन्न अंग है । राज्य आन्तरिक क्षेत्रों को संगठित करने हेतु नियम बनाता है तथा क्षेत्रों में एकरूपता स्थापित करता है । यद्यपि कुछ अर्थों में जैसे धर्म, शिक्षा अथवा अन्य सामाजिक गतिविधियों में कुछ क्षेत्रीय असमानता भी स्वीकार कर लेता है । आर्थिक क्षेत्र में भी कुछ रूपों में

जैसे मुद्रा, आर्थिक संस्थान एवं सम्बन्धों आदि में एकरूपता रखता है । इसके अतिरिक्त राज्य का सर्वप्रमुख कार्य अपने निवासियों एवं क्षेत्र की विदेशी आक्रमणों से रक्षा करना है । इन सभी विवेचनों में भूगोलवेता क्षेत्रीय विविधता को प्रमुखता देता है। राज्य के कार्य–निर्धारण में हार्टशोर्न ने दो तत्वों का प्रमुखता से वर्णन किया है, प्रथम – केन्द्र से बाह्मवर्ती शक्तियाँ एवं द्वितीय–केन्द्रवर्ती शक्तियाँ ।

(i) **केन्द्र से बाह्मवर्ती शक्तियाँ** (Centrifugal Forces)

भूगोलवेत्ता उन सभी प्राकृतिक अवरोधों से परिचित होते हैं जो विभिन्न क्षेत्रों के मध्य की संचार व्यवस्था में बाधक होते है । राज्य प्रशासन के लिये संचार–व्यवस्था न केवल एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र में सम्बन्ध स्थापित करने हेतु आवश्यक है अर्पित केन्द्र से समीपवर्ती क्षेत्रों को संयुक्त करने का साधन है । इस दिशा में दूरी (Distance) भी एक बाह्मवर्ती शक्ति के रूप में हैं । इसका सम्बन्ध राज्य के विस्तार एवं आकार से होता है । मानव भी एक अवरोधक के रूप में होता हैं, जैसे, किसी क्षेत्र में मानव का न होना अथवा अत्यधिक कम होना भी एक अवरोध है । इस प्रकार के क्षेत्रो के कारण पृथकता की भावना जागृत होता है । यही कारण है कि महासागर, आर्कटिक का हिममण्डित क्षेत्र आदि पृथकता का घोतक रहे हैं । इसी प्रकार मध्ययुग में आल्पस एवं अपलेशियन पर्वत–श्रेणियों अवरोधक के रूप मे रहे हैं ।

यदि एक ही राज्य की जनसंख्या में विविधता होती हैं तो उसका प्रभाव बाह्मवर्ती शक्ति के रूप में अत्यधिक प्रभावशाली होता है । इस दिशा में राज्य के सामाजिक स्वरूप में समता का विकास आवश्यक हो जाता है, अन्यथा राष्ट्रीय एकता में बाधक होता है । राज्य का सामाजिक स्वरूप भाषा, धर्म, शिक्षा, जीवन स्तर, राजनीतिक भावना आदि पर निर्भर करता है । ये सभी तत्व, राज्य के लिये बाह्मवर्ती शक्ति के कारक होते है, यद्यपि प्रत्येक क्षेत्र में इनका प्रभाव भिन्न –भिन्न होता है । यदि एक राज्य का कोई प्रदेश दूसरे देश से सम्बन्ध रखता है तो उसका प्रभाव राज्य की सुरक्षा एवं शान्ति पर पड़ता है । भारत में असम एवं अन्य पूर्वी राज्यों में वर्तमान समय में उद्भूत अशांति का एक कारण उस प्रदेश की जनसंख्या का अन्य देश के साथ राजनीतिक सम्बन्ध भी है । भूगोलवेत्ता एक प्रदेश के प्राकृतिक स्वरूप एवं आर्थिक स्वरूप के आधार पर राजनीतिक व्यवस्था एवं सुदृढ़ता का अध्ययन कर सकता है ।

(ii) **केन्द्रवर्ती शक्तितयाँ** (CentripetalCentripetal ForcesForces)

केन्द्र से बाह्मवर्ती शक्तियों के अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि एक राज्य में अनेक तथ्य कार्यरत रहते हैं जिनके कारण राज्य में एकरूपता के स्थान पर विविधता का विकास होता है । फलस्वरूप प्रशासन की कुशलता में बाधा पड़ती है, किन्तु राज्य में केवल बाह्मवर्ती शक्तियाँ ही कार्य नहीं करती, अपितु अनेक केन्द्रवर्ती शक्तियाँ भी रहती है जिनमें राज्य में एकता बनी रहती है ।

राज्य के लिये सबसे प्रमुख केन्द्रवर्ती शक्ति राज्य विचार (State–idea) है । प्रत्येक राज्य के अस्तित्व का कारण (Raison D' etre) होता है । राजनीतिक भूगोल

में यह विचार नवीन नहीं अपितु रेटजेल तथा अन्य भूगोलवेत्ताओं ने इस पर विचार प्रस्तुत किये है । रेटजेल ने राज्य की व्याख्या एक क्षेत्र, एक मानव समूह तथा एक विशिष्ट विचार के पोषक के रूप में की हे । उन्होनें यह भी व्यक्ति किया कि वे राज्य शक्तिशाली होते हैं जहाँ राज्य के राजनीतिक विचार सम्पूर्ण राज्य में व्याप्त होते हैं । अत: हार्टशोर्न ने यह मत व्यक्त किया है कि राज्य की बाह्यावर्ती शक्तियों से उद्भूत समस्याओं के अध्ययन ने पूर्व राज्य के प्रारम्भिक राजनीतिक विचार जो संयुक्त शक्ति का कार्य करते हैं का अध्ययन किया जाता है । माउल (Maull) दूसरे जर्मन भूगोलवेत्ता थे जिन्होनें राज्य विचार का कुछ विस्तार से प्रतिपादन किया । एक राज्य के अस्तित्व हेतु राज्य विचार एक प्रमुख भूमिका रखता है । जब तक राज्य विचार प्रभावशाली होता है, राज्य शक्तिशाली रहता है, जैसे ही राज्य विचार की भावना क्षीण होती जाती है, राज्य की शक्ति में भी कमी आ जाती है । यही नहीं, अपितु अनेक बार राज्य में आन्तरिक उपद्रवों का आरम्भ हो जाता हैं । रेटजेल ने इस तथ्य का वर्णन करते हुये लिखा है "Those states are strongest in which the political idea of the fills the entire body of the state, extends to all its parts." राज्य विचार के अध्ययन हेतु राजनीतिक भूगोलवेत्ता को उस प्रदेश की ऐतिहासिक पृष्ठ–भूमि का अध्ययन करना आवश्यक होगा ।

इसी प्रकार राष्ट्र–परिकल्पना (The concept of nation) की भावना से एकत्व का विकास होता है । राज्य भाषा, धर्म या अन्य सामाजिक विशिष्टताओं के विकास का साधन मात्र नहीं अपितु उसका प्रमुख उद्देश्य राजनीतिक होता है । ज्यों–ज्यों राज्य के लोगों में परिपक्वता आती जाती है उनकी राज्य के प्रति राजनीतिक आस्था मे वृद्धि होती जाती है । सामान्यत: एक राज्य के निवासी उस सरकार को महत्व देते हैं जो उनके स्वयं के लोगों द्वारा परिचालित हो नकि विदेशियों द्वारा, अर्थात राज्य का प्रत्येक नागरिक स्वयं को राज्य का एक अंग मानने से गौरवान्वित अनुभव करता है । यही कारण है कि औपनिवेशिक शासन के अर्न्तगत प्रजा सदैव असन्तुष्ट रही और क्रमश: उस शासन–तन्त्र का विघटन हुआ और स्वतन्त्र राष्ट्र राज्यों (Nation–State) का उद्भव हुआ । राष्ट्रीयता के विकास होने पर भाषा एवं धर्म की विविधता होते हुये भी राजनीतिक समानता का विकास होता है जैसे कि स्विट्जरलैण्ड में चार भाषा होते हुए भी राजनीतिक विचारधारा में पर्याप्त समानता है । इसी प्रकार अनेक राज्यों में क्रोड या उद्भव क्षेत्र (Core–area) राष्ट्रीय एकता के घोतक होते हैं, जैसा कि फ्रांस, इंगलैण्ड, स्काटलैण्ड, स्वीडन आदि मे देखने को मिलता है ।

राजनीतिक भूगोलवेत्ता के लिये आवश्यक है कि वह राज्य के अस्तित्व के कारणों को ज्ञात करे, क्योंकि इसी के द्वारा राज्य में एकता रहती है । सर्वप्रथम उस क्षेत्र का निधारण करना होगा, जहाँ यह विचार कार्यरूप में है, तत्पश्चात् अन्य क्षेत्रों में उसकी प्रधानता और अन्त में राज्य के सभी क्षेत्रो को संयुक्त करने की क्षमता का अध्ययन आवश्यक है । इसके अन्तर्गत यह अध्ययन करना भी आवश्यक है कि राज्य

की कानूनी सीमा के अन्तर्गत व्याप्त विविधतायें किस प्रकार से राज्य के राजनीतिक स्वरूप एवं आन्तरिक संगठन को प्रभावित करती हैं ।

बोध प्रश्न

1. ऐतिहासिक दृष्टिकोण के प्रमुख समर्थक कौन हैं?
2. में अमेरिकन भूगोल परिषद् के अध्यक्ष का नाम क्या था?
3. रेजन डीदे (राज्य का अस्तित्व कारण) किस भूगोलवेत्ता का विचार था?
4. राष्ट्र का उद्भव क्षेत्र (Core–Area) कहाँ होता है?
5. राज्य विचार (State–Idea) के प्रतिपादक कौन थे?
6. भारतीय उपमहाद्वीप में कौन–सा देश अन्तस्थ राज्य (Buffer State)हैं?

2.5.2 **बाह्य पक्ष**

राजनीतिक भूगोल में राज्य के कार्य सम्बन्धी दृष्टिकोण में हार्टशोर्न ने द्वितीय चरण में राज्य के बाहरी कार्यो का अध्ययन सम्मिलित किया है । इसमें राज्य का अन्य राज्यों एवं संगठनों के साथ विभिन्न प्रकार के सम्बन्धों को सम्मिलित किया जाता है । इन सम्बन्धों को चार समूहों, अर्थात क्षेत्रीय, आर्थिक, राजनीतिक एवं सामरिक में विभक्त किया जा सकता है ।

(i) **क्षेत्रीय सम्बन्ध** (Territorial relation)

इसमें सर्वप्रथम सीमावर्ती देशों के साथ सम्बन्ध सम्मिलित किये जाते हैं । प्रत्येक देश की सीमाओं का निर्धारण एवं क्षेत्रीय समायोजन अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों को अत्यधिक प्रभावित करते हैं तथा यह भौगोलिक अध्ययन में महत्व रखता है । सीमाओं के निर्धारण, प्रकृति, कार्य आदि पर राजनीतिक भूगोल में पर्याप्त कार्य किया गया है । सीमाओं का राज्य के जीवन में अत्यधिक महत्व होता है । विगत दो दशकों में अमेरिकन तथा अन्य देशों के भूगोलवेत्ताओं ने सीमाओं के उद्भव, प्रकार एवं महत्व पर महत्वपूर्ण कार्य किये हैं । इनका विस्तार से विवेचन सीमान्त एवं सीमाएँ नामक अध्याय में किया गया है । सीमाओं की जहाँ राजनीतिक महता हैं, वहीं आर्थिक भी है, क्योंकि सीमा पार व्यापार हेतु राज्य नियम बनाता हैं ।

(ii) **आर्थिक सम्बन्ध** (Economic relations)

राज्यों में विभिन्न वस्तुओं का व्यापार आर्थिक भूगोल के क्षेत्र से सम्बन्ध रखता है. किन्तु राज्य द्वारा आर्थिक सम्बन्धों का निर्धारण किया जाता है । आर्थिक व्यापार की नीतियों का निमार्ण राज्य द्वारा किया जाता है । अधिकांशत: व्यापार उन्हीं देशों के साथ किया जाता है, राजनीतिक सम्बन्ध मित्रतापूर्ण होते हैं । अत: राज्य के आर्थिक सम्बन्धों का अध्ययन राजनीतिक भूगोल में सम्मिलित किया जाता है । भूगोलवेत्ता इस अध्ययन में एक राज्य की दूसरे राज्य पर आर्थिक निर्भरता का उसकी स्थिति एवं राजनीतिक सन्दर्भ में अध्ययन करता है । आर्थिक आदान–प्रदान की प्रक्रिया में राज्य का आकार, विशेषकर जनसंख्या के सन्दर्भ में, की विशेष भूमिका होती

है । साथ ही राजनीतिक सम्बन्धों का आर्थिक सम्बन्धों के निर्धारण में महत्वपूर्ण योग होता है । जैसे ही एक देश के दूसरे देश के साथ राजनीतिक सम्बन्ध विच्छेद होते हैं, उसके आर्थिक सम्बन्ध या व्यापार आदि भी समाप्त हो जाते हैं । वर्तमान समय में विदेशी आर्थिक सहायता भी महत्वपूर्ण भूमिका रखती है ।

(iii) **राजनीतिक सम्बन्ध** (Political Relations)

राजनीतिक सम्बन्ध के अन्तर्गत मुख्यतया एक राज्य का उसके क्षेत्र से अतिरिक्त भाग पर सफल राजनीतिक नियन्त्रण सम्मिलित किया जाता है । जैसे– उपनिवेश या नियन्त्रित प्रदेश, आदि । इस प्रकार औपनिवेशक या साम्राज्यवादी राज्य पश्चिमी यूरोप में आठ तथा संयुक्त राज्य अमेरिका, जापान, आस्ट्रेलिया और न्यूजीलैण्ड हैं । जर्मनी प्रथम महायुद्ध के पश्चात् एवं जापान द्वितीय महायुद्ध के पश्चात् इस तालिका से अलग हो गये है । इसके अतिरिक्त कुछ राज्यों के समीप क्षेत्र कानूनी दृष्टि से उनके अंग हैं, किन्तु वास्तव में वे राज्य के अंग नहीं हैं । इस प्रकार के देशों में कनाडा, नार्वे, स्वीडन, रूस, चीन, दक्षिणी अफ्रीका, लेटिन अमेरिका के अनेक देश इण्डोनेशिया आदि का वर्णन हार्टशोर्न ने किया है । राजनीतिक सम्बन्धों में राज्यों द्वारा आपसी हितों की रक्षा के लिये किये गये समझौते अथवा संगठन भी सम्मिलित किये जाते हैं ।

(iv) **सामरिक सम्बन्ध** (Strategic Relations)

सामरिक सम्बन्ध में अधिकांशत: तात्पर्य है, राष्ट्रीय शक्ति जिस भूगोलवेत्ता निश्चित रूप से विचार व्यक्त कर सकता है । इसके अन्तर्गत उन सभी भौगोलिक तत्वों का समावेश किया जाता है, जो राष्ट्रीय शक्ति को प्रभावित करते हैं । यद्यपि राज्य की एक सापेक्षित तथ्य हैं और यह भौगोलिक तत्वों के साथ–साथ राजनीतिक प्रारूप, विदेश, आदि अनेक तथ्यों पर निर्भर करती है । हार्टशोर्न का कहना है कि विश्व में प्रत्येक राज्य जन्य राज्यों के सन्दर्भ में सामरिक महत्व रखता है ताकि इसका विश्लेषण अन्य राज्यों के सन्दर्भ में ही किया जा सकता है । स्विट्जरलैण्ड की सामरिक स्थिति के कारण ही यह दोनों महायुद्धों में अप्रभावित रहा ओर आज भी इसका सामरिकता की दृष्टि से विशेष महत्व है ।

उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि रिचार्ड हार्टशोर्न ने राजनीतिक भूगोल में राज्य का कार्य सम्बन्धी दृष्टिकोण प्रस्तुत कर एक नवीन दिशा प्रदान की । अपने प्रपत्र के अन्त में उन्होनें राजनीतिक भूगोल का केन्द्रीय विचार सम्पूर्ण क्षेत्रीय भिन्नता में एक विशिष्ट क्षेत्र अर्थात राजनीतिक इकाई को व्यक्त किया । राजनीतिक भूगोल में जो कार्य हो रहे हैं, उनमें उपर्युक्त विचारधारा की ही प्रधानता है । वास्तव में, राज्य की महता एक क्षेत्रीय इकाई के रूप में न होकर उसके कार्यो की है, जो वह क्षेत्रीय इकाई सम्पन्न करती है । हार्टशोर्न द्वारा प्रतिपादित विचार निस्सन्देह राजनीतिक भूगोल के अध्ययन को एक सही दिशा प्रदान करते हैं ।

2.6 क्षेत्र एकरूपता का सिद्धान्त (Unified Field Theory)

राजनीतिक भूगोल में क्षेत्र एकरूपता सिद्धान्त का प्रतिपादन स्टेफेन बी. जोन्स (Stephen B. Jones) ने किया जिसका प्रकाशन 1954 में अमेरिकन भूगोलवेत्ता परिषद् की पत्रिका में हुआ । यह राजनीतिक भूगोल में नवीन सिद्धान्त है अत: इसका समुचित अपेक्षित है । जोन्स ने सर्वप्रथम स्पष्ट किया है कि इस सिद्धान्त का नामकरण यूनीफाइड फील्ड (जिसका हिन्दी रूपान्तर अर्थ की दृष्टि से क्षेत्र एकरूपता किया है) भौतिक विशेषता के आधार पर नहीं किया गया, अपितु यह विशेषण इसलिए प्रयुक्त किया गया है । क्योंकि इसमें तीन भूगोलवेता डेरवेंट हिट्लेसी (Derwent Whittlesey), रिचार्ड हार्टशोर्न (Richard Hartshorne) एवं जीन गॉटमेन (Jean Guttmann) के विचार सम्मिलित है ।

उपर्युक्त भूगोलवेत्ताओं से लेकर जोन्स ने क्षेत्र एकरूपता सिद्धान्त की व्याख्या विचार– क्षेत्र–शृंखला (The Idea–Area Chian) के रूप में प्रस्तुत किया । इस शृंखला में विचार और राज्य दो सिरे हैं । उनका कहना है कि इस शृंखला में लोहे की चेन नहीं मानना चाहिये जिसमें कि कड़ियाँ अलग–अलग होती हैं, अपितु यह श्रृंखला झील अथवा बेसिन (Basin) की है, जो एक तल पर मिली रहती है, जिससे एक का जल दूसरे में जाता है । क्षेत्र एकरूपता का सिद्धान्त की शृंखला इस प्रकार है : राजनीतिक विचार–निर्णय–गति–क्षेत्र– राजनीतिक–क्षेत्र ।

सर्वप्रथम राज्य के उद्भव का विचार मानव में आता है जैसा कि कहा जाता है युद्ध सर्वप्रथम मानव मस्तिक में प्रारम्भ होता है उसी प्रकार राज्य का विचार आता है । उपर्युक्त विचार को समर्थन प्राप्त होते ही क्रिया (Action) आरम्भ हो जाता है । यह गति (Movement) गॉटमेन द्वारा प्रतिपादित परिवहन ही है । कुछ निर्णय गति में वृद्धि करते हैं, कुछ रोकते हैं तथा कुछ दिशा परिवर्तन करते हैं । यह गति मनुष्यों अथवा वस्तुओं की हो सकती है अथवा केवल मात्र रेडियो तरंगों तक ही सीमित रह सकती है । गति के लिये क्षेत्र अपेक्षित है । क्षेत्र शब्द का प्रयोग समय एवं स्थान के सन्दर्भ में किया गया है जैसा कि ह्रिटीलसी ने कहा है कि इसका समय विस्तार एवं क्षेत्र विस्तार होता है । यही क्षेत्र अन्त में राजनीतिक क्षेत्र या अन्य के रूप में नजर आता है ।

इस सिद्धान्त को स्पष्ट करते हुये प्रो. जोन्स ने उदाहरण दिया है – यहूदी धर्म एक विचार, बेलफोर घोषणा पत्र (Balfour Declaration) एक निर्णय, स्थानान्तरण एवं अन्य गतिशीलता, शासन एवं अन्य क्रियाओं का स्थल इजराइल जो राज्य के रूप में आ गया । यद्यपि इस द्रुतगति से राज्य निर्माण की प्रक्रिया को स्पष्ट करना इतिहास को साधारण रूप में व्यक्त करना है । किन्तु यह सत्य है कि यह सिद्धान्त एक रास्ता है, भौगोलिक एवं राजनीतिक अध्ययन का है । यद्यपि यह राजनीतिक भूगोल को पांच सरल क्रम मे विभक्त नहीं करता अपितु इसके लिये

अत्यधिक ऐतिहासिक, राजनीतिक एवं भौगोलिक सूचनाओं का होना आवश्यक है जिसके आधार पर अध्ययन किया जा सके ।

प्रो. जोन्स ने अपने सिद्धान्त को और स्पष्ट करते हुये लिखा है कि राष्ट्रीय शक्ति, सीमा, राजधानी आदि का अध्ययन भी इस सिद्धान्त के अन्तर्गत आता है । राष्ट्रीय शक्ति के लिये निर्णय लेने की क्षमता होना आवश्यक है जो इस सिद्धान्त का अंग है । इसी प्रकार सीमायें दो राजनीतिक क्षेत्रों के मध्य रेखा होती है । सीमा परिवहन को सीमित करती हैं तथा सीमा क्षेत्र कभी–कभी अन्तस्थ राज्य (Buffer State) का रूप ले लेते है । इसी प्रकार राजधानी के चुनाव के लिये अनेक विचार करने होते हैं तथा परिवहन एंव संचार के साधन उसको अन्य शहरों की अपेक्षा अधिक संयुक्त करते हैं ।

इस सिद्धान्त की उपयोगिता के सम्बन्ध में स्वयं जोन्स ने अपने प्रपत्र के अन्त में व्यक्त किया है कि इसको सिद्धान्त मानने के लिये सहज तैयार नहीं होगें । उनका विचार है कि यह राजनीतिक भूगोल के उद्देश्यों एवं विधियों में व्याप्त विविधता को समाप्त कर उनको एकता के सूत्र में बांधने का कार्य करेगा । यह संरचना, कार्य तथा प्रदेश प्रक्रिया को संयुक्त करने में सहायक होगा । इसके अतिरिक्त यह राजनीतिक भूगोल एवं राजनीति शास्त्र में एकता स्थापित करने में समर्थ होगा । इसकी सहायता से भूगोलवेत्ता नवीन प्रकार के मानचित्रों का निर्माण कर सकेंगे । यहीं नहीं, अपितु इसके आधार पर सामरिक तथा अन्य राजनीतिक विचार करने में सहायता मिलेगी । अन्त में जोन्स के ही शब्दों में यदि यह सिद्धान्त गहन अन्धकार में तनिक रोशनी दे सका तो यह सफल होगा ।

2.6.1 क्षेत्र एकरूपता सिद्धान्त द्वारा बंगलादेश का उद्भव विश्लेषण

क्षेत्र एकरूपता के सिद्धान्त के उदाहरणस्वरूप जोन्स ने इजराइल राज्य के उद्भव को स्पष्ट किया । इसी सिद्धान्त के सन्दर्भ में बांग्लादेश का एक नवीन राज्य के रूप में उद्भव को सक्सेना ने विस्तार से स्पष्ट किया । इसका संक्षिप्त विवेचन उपर्युक्त सिद्धान्त को स्पष्ट रूप से समझाने हेतु अपेक्षित है ।

राजनीतिक विचार (Political Idea)

बंगला देश के उद्भव में राजनीतिक विचार अति महत्वपूर्ण रहा है । इसका प्रादुर्भाव ब्रिटिश कूटनीति से ही हो गया था, जबकि पाकिस्तान को पूर्वी एवं पश्चिमी भागों के रूप में अस्तित्व में लाया गया, जो अव्यावहारिक था । इन दोनों भागों में धर्म को एकता थी, अन्यथा यह अभौगोलिक था । पृथक बंगला देश के राज्य विचार के लिये निम्नलिखित तत्व उत्तरदायी थे –

1 **ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक** – पूर्वी एवं पश्चिमी पाकिस्तान के 24 वर्षो का इतिहास दोनों भागों के संघर्ष का इतिहास रहा है । बंगाली मुसलमानों को सदैव दबाया जाता रहा तथा उनका शोषण किया जाता रहा । पश्चिमी पाकिस्तान सदैव से प्रशासन का आधार एवं केन्द्र रहा । प्रशासनिक सेवाओं, सेना, आदि में पश्चिम

का अधिक प्रतिनिधित्व था । धर्म, यद्यपि दोनों भागों में समान था, किन्तु भाषा में भिन्नता थी, जबकि उर्दू को राज्य भाषा बनाया गया । बंगाली भाषा के लिये संघर्ष किया गया ।

2. **प्राकृतिक तत्व** – भौगोलिक या प्राकृतिक तत्व भी पृथक बंगला देश राज्य विचार के लिये उत्तरदायी रहे । राज्य की स्थिति एवं आकार की इसमें प्रमुख भूमिका रही । यह एक विभक्त राज्य (Fragemented State) था तथा दोनों भागों के मध्य लगभग 1,500 किमी का भारतीय क्षेत्र था । दोनों भागो की जलवायु धरातल, मिट्टी आदि में भिन्नता थी । राज्य की राजधानी भी पश्चिम में स्थित थी।
3. **आर्थिक तत्व** – पश्चिम एवं पूर्व की आर्थिक भिन्नता एवं पश्चिम का पूर्व के प्रति सौतेला व्यवहार करना तथा सदैव उसका शोषण करना बंगला देश पृथक् राज्य के विचार के लिये उत्तरदायी था । योजना में अधिकांश विकास कार्य पश्चिम में किये गये, जबकि आय की उपलब्धि पूर्व से अधिक होती थी ।

निर्णय (Decision)

सिद्धान्त के दूसरे चरण में अलग राज्य का निर्णय बंगला देश के संदर्भ में अवामी लीग (बंगला देश की उस समय की प्रमुख पार्टी) का 6 सूत्रीय कार्यक्रम भा । वह इस प्रकार से थे–

1. पाकिस्तान का संविधान संघीय होना चाहिये तथा विधान परिषद् का चुनाव वयस्क मताधिकार के आधार पर होना चाहिये ।
2. संघीय विषय केवल सुरक्षा एवं विदेश नीति तक सीमित होने चाहिए ।
3. दोनों भागों के लिये अलग मुद्रा होनी चाहिये, जिसे आसानी से बदला जा सके ।
4. टैक्स लगाने एवं राजस्व एकत्रीकरण का अधिकार राज्यों को होना चाहिए ।
5. पूर्व एवं पश्चिम के लिये पृथक विदेशी मुद्रा वितरण होना चाहिए तथा दोनो भागों में समानता के आधार पर वितरण होना चाहिए ।
6. सुरक्षा में पूर्वी पाकिस्तान को आत्मनिर्भरता प्रदान करने के लिये रक्षा उत्पादन कारखाना तथा नौ–सेना का केन्द्र पूर्व में होना चाहिये ।!

उपर्युक्त सूत्रों के आधार पर दिसम्बर 1970 में जब आवामी लीग ने चुनाव लड़ा तो उसे भारी बहुमत मिला, जो अन्त में बंगला देश के उद्भव का कारण बना ।

गति (Movement)

निर्णय के क्रियान्वित हेतु गतिशीलता आवश्यक है । बंगला देश में यह गतिशीलता सेनाओं का स्थानान्तरण एवं आक्रमण, नागरिक जनसंख्या का शरणार्थी को रूप में भारत आना तथा पुन: स्वतन्त्र बनने पर वापस जाना सम्मिलित है । मुक्तिवाहिनी सेना तथा भारत की सेना के सम्मिलित प्रयासों से 16 दिसम्बर, 1971 को पाकिस्तान की सेना ने, आत्मसमर्पण किया ।

क्षेत्र (Field)

सेना, नागरिकों की गतिशीलता एंव विचारों ने एक क्षेत्र विकसित किया । यह सब क्रिया पूर्वी पाकिस्तान में सम्पन्न हुई । इसी प्रकार विचार क्षेत्र का विकास रेडियों एवं पत्र–पत्रिकाओं के माध्यम से विकसित हुआ, फलस्वरूप बंगलादेश का क्रमिक मान्यता प्राप्त हुई । यह एक हकीकत है । सम्पूर्ण विश्व इसका साथी है ।

राजनीति क्षेत्र (Political aArea)

सिद्धान्त के अन्तिम चरण में बंगला देश का नवीन राज्य के रूप में उद्भव हुआ जिसका क्षेत्रीय विस्तार 1,42,879,94 वर्ग किमी. है । इस सिद्धान्त के व्याख्यार्थ यह उदाहरण परमावश्यक है । इसके लिए संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि :–

"An application of "Unified Field" to explain the emergence of Bangla Desh in brief is fairly simple : Exploitation of East wing created idea, the charter of autonomy as decision followed by movement, the territory of East was the field of activity, and war leads to the state of Bangla Desh."

बोध प्रश्न 3

1. क्षेत्र एकरूपता के सिद्धान्त के प्रतिपादक का नाम क्या है?
2. तन्त्र उपागम का स्वरूप आरेखों के माध्यम से किन लेखकों ने किया हैं?
3. मुक्तवाहिनी सेना किस देश की थी?
4. विश्व में कौन–सा देश सबसे अच्छा राष्ट्र हैं? ।
5. कार्य सम्बन्धी दृष्टिकोण के प्रतिपादक का नाम क्या है?
6. अनाल्स ऑफ दी अस्सोसियसन ऑफ ज्योग्राफर किस देश की पत्रिका है?
7. कार्य सम्बन्धी दृष्टिकोण में राज्य की दो बड़ी शक्तियों के नाम क्या हैं?

2.7 तन्त्र उपागम दृष्टिकोण (The System Approach in Political Geography)

तन्त्र उपागम अर्थात सिस्टम अप्रोच अध्ययन की एक विधा है, जिसके अन्तर्गत विभिन्न तथ्यों का क्रमबद्ध रूप में निरूपण किया जाता है । अत: राजनीतिक भूगोल में भी इस पद्धति का उपयोग किया जाने लगा है । इसकी व्याख्या करते हुए लिखा है –

"A system comprises parts or elements, the relationship between them, and the process of interaction on which that relationship rest"."

इसे तन्त्र उपागम दृष्टिकोण भी कहा जाता है अर्थात इसके अन्तर्गत विभिन्न तत्व होते हैं । उनमें आपसी सम्बन्ध एवं क्रियाओं पर ही वास्तविक सम्बन्ध निर्भर

करते हैं । तन्त्र की रूपरेखा पर्यावरण के अन्तर्गत अन्य तत्वों के समन्वय के फलस्वरूप ही होती है । अन्तराष्ट्रीय सम्बन्धों को आवृत तन्त्र (Clossed System) के अर्न्तगत अध्ययन किया जाता है, जिसमें उप–तंत्र (Sub–System) होते हैं, जो वृहत तन्त्र के भाग होते हैं । इन उप–तन्त्रों को अभिनेता (Actors) की संज्ञा दी जाती है । अन्तर्राष्ट्रीय तन्त्र के अभिनेता राज्य है, यद्यपि अन्य अभिनेता अन्तर्राष्ट्रीय संगठन, समुदाय आदि हैं । इसी प्रकार क्षेत्रीय तन्त्र (regional system) भी विकसित होते हैं, जैसे – यूरोपीय साझा बाजार (European Commen Market), आदि ।

अभिनेता (Actor) के साथ ही तन्त्र में संरचनात्मक अवयव (Structure) होते हैं तथा इनमें क्रियात्मक सम्बन्ध होता हैं, जिसे क्रिया (Process) कहा जाता है । वह क्रिया किसी सन्दर्भ (Context) में होती है, जैसे – आर्थिक, सामाजिक आदि । अभिनेता, क्रिया तथा सन्दर्भ में स्वतन्त्र तथ्य (independent Variable) होते हैं इसके अतिरिक्त निर्भर तथ्य (Dependent Variable) होते हैं, जैसे – शक्ति, शक्ति–संगठन, स्थायित्व, तन्त्र परिवर्तन आदि ।

तन्त्र उपागमन की एक पद्धति इखला (Linkage) हैं जिसमें एक ओर तत्व प्रवेश्य (In put) होता है तो दूसरी ओर तत्व निष्कासन (Out put) होता हैं । अवरोधक के अन्तर्गत एक इकाई दूसरी के विकास में प्रत्यक्ष योग देती हैं, जैसा कि सोवियत संघ का पूर्वी यूरोप के आर्थिक विकास में योग । प्रतिक्रियात्मक श्रृंखला (reactive linkage) में निष्कास्य क़े लिये उत्तरदायी प्रवेश्य तथ्य दूसरी इकाई से सम्बन्धित नहीं हैं, जैसा कि एक देश दूसरे देश !पर आक्रमण की योजना बनाता हैं । इसके अतिरिक्त प्रतिस्पर्द्धात्मक श्रृंखला(Emulative Linkage) में एक इकाई की क्रिया –दूसरी में प्रतिस्पर्द्धा जागृत करती है, जैसे – संयुक्त राज्य का चन्द्रमा पर मानव उतारना सोवियत संघ पर प्रभाव डालेगा ।

राज्यों के आन्तरिक एवं बाह्य अध्ययन तथा अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों का क्रमबद्ध रूप से अध्ययन करने में उपर्युक्त दृष्टिकोण उपयोगी है । राज्य एक प्रशासनिक इकाई हैं, जिसका एक संगठनात्मक स्वरूप –होता है – सीमाएँ, कार्यपालिका, व्यवस्थापिका, न्यायपालिका एवं अन्य प्रशासनिक इकाइयाँ । यह सदैव अपनी जनसंख्या की माँग और पूर्ति के लिये तथा विकास हेतु अनेक कार्य करता हैं, जिनका सम्बन्ध राज्य के आर्थिक, सामाजिक तथा राजनीतिक विकास से होता है । यह अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों को बनाता है तथा राज्य को एक शक्तिशाली रूप में बनाने का प्रयत्न करता है । पर्यावरण के तत्वों का भी राज्य के विकास में योग होता है । तन्त्र उपागम का स्वरूप कोहेन ओर रोसेनथल (Cohen Rosenthal) ने निम्न आरेखों के माध्यम से स्पष्ट किया है ।

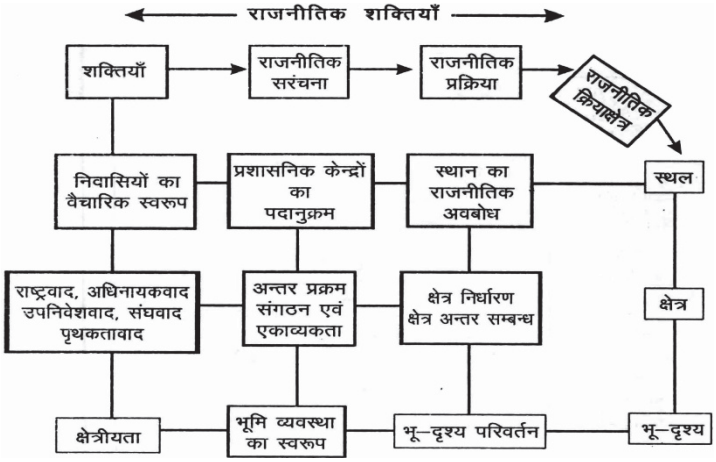

राजनीतिक व्यवस्था का भौगोलिक स्थल एव मानव की राजनीतिक भूमिका के विविध स्वरूपों को उपर्युक्त मॉडल में प्रदर्शित किया गया है । मनुष्य अपनी राजनीतिक भूमिका वैचारिक संगठनात्मक, प्रक्रिया के अन्तर सम्बन्ध से भौगोलिक स्थल, क्षेत्र एवं सामान्य भूदृश्य का राजनीतिक स्वरूप उभर कर आता है । ये सभी तत्व अन्तर सम्बन्धित एवं अन्तर–प्रक्रिया द्वारा एक राजनीतिक व्यवस्था को जन्म देते हैं । जिसे अग्र आरेख में प्रस्तुत किया गया है –

मॉडल

राजनीतिक व्यवस्था

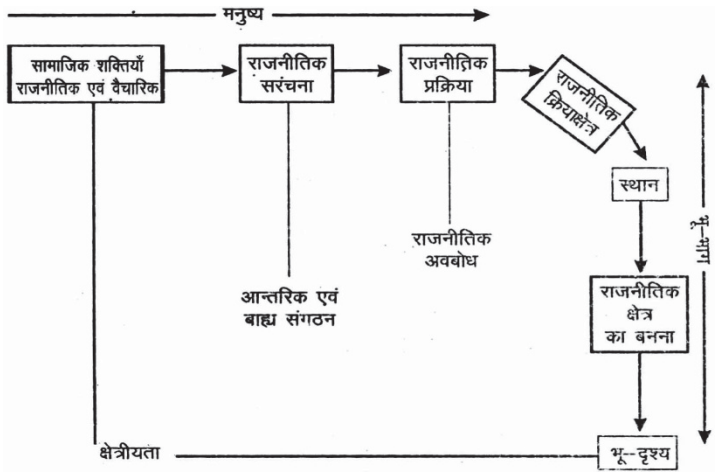

उपर्युक्त आरेख में –राजनीतिक व्यवस्था को एक प्रक्रम के रूप में व्यक्त किया गया है जो मानव एवं वहाँ के क्षेत्र के विविध स्वरूपों को व्यक्त करता है । यह राजनीतिक भूगोल के अध्ययन में राजनीतिक अवस्था एवं पर्यावरण सम्बन्धों को स्पष्ट करता है ।

2. 8 सारांश'

राजनीतिक भूगोल कोई नया विषय या भूगोल की कोई नवीन शाखा नहीं है । कान्ट ने 1756 में लिखा था कि राजनीतिक भूगोल राज्यों के सम्बन्ध एवं उनकी

प्राकृतिक पृष्ठभूमि का अध्ययन करता है । इसके पश्चात् तो वर्तमान काल तक विश्व के अनेक विद्वानों ने भूगोल की इस अति महत्वपूर्ण एवं संवेदनशील शाखा के विकास में बहुत अधिक योगदान किया है । इसे परिभाषित करने, इसके क्षेत्र का निर्धारण करने, इसका अन्य विज्ञानों से संबंध, इसकी विकास यात्रा, इसकी विषय सामग्री, इसके मूलभूत तत्व, शासन पद्धतियाँ और राजनीतिक भूगोल के उाध्ययन दृष्टिकोण आदि विषयों पर सैकड़ों विद्वानों ने शोध कार्य किये हैं और अपने मौलिक विचार प्रकट किये हैं । इनमें भूगोलवेत्ताओं के साथ–साथ राजनीति वैज्ञानिक, इतिहासकार, राजनेता और अन्य मानवशास्त्रियो का योगदान रहा है ।

अब तक के. अध्ययनों के आधार पर राजनीतिक भूगोल के अध्ययन के छ : दृष्टिकोण–शक्ति विश्लेषण, ऐतिहासिक, संरचनात्मक, कार्यात्मक, क्षेत्रीय एकरूपता सिद्धान्त व तन्त्र उपागम दृष्टिकोण प्रकाशन में आये हैं । इन सभी अध्ययन दृष्टिकोण के निर्माण एवं विकास में रिचार्ड हार्टशोर्न, स्टीफन बी. जोन्स, ए.ई. मूडी, कोहन, ह्रिटलसी, एस.बी. जोन्स आदि भूगोलवेत्ताओं व राजनीति के विद्वानों. का योगदान रहा है । इनमें 1950 में रिचार्ड हार्टशोर्न का कार्य सम्बन्धी दृष्टिकोण और 1954 में एस. बी. जोन्स का क्षेत्र एकरूपता का सिद्धान्त मील के पत्थर हैं । क्षेत्र एकरूपता के सिद्धान्त में डेरवेंट ह्रिटलसी, रिचार्ड हार्टशोर्न तथा जीन गॉटमेन का योगदान बहुत अधिक महत्वपूर्ण है ।

2.9 शब्दावली

शक्ति विश्लेषण	:	भौगोलिक तथ्यों को शक्ति निर्धारक तत्व मानकर राज्यों का अध्ययन करना
ऐतिहासिक दृष्टिकोण	:	राज्य के जन्म से लेकर वर्तमान काल तक का अध्ययन।
संरचना दृष्टिकोण		राज्य की संरचना के विभिन्न तत्वों को केन्द्र बिन्दु मानकर अध्ययन करना ।
कार्यात्मक दृष्टिकोण	:	राज्य को एक राजनीतिक इकाई के रूप में कार्य करते रहने का विचार।
केन्द्र से बाह्रावर्ती शक्तियाँ	:	राज्य में बिखराव उत्पन्न!,करने वाली ताकते ।
केन्द्रवर्ती शक्तियाँ	:	राष्ट्रीय एकता उत्पन्न करने वाली ताकतें ।
अन्तस्थ राज्य	:	दो महाशक्तियों के मध्य स्थित छोटा देश ।
सामरिक सम्बन्ध	:	राष्ट्रीय सुरक्षा से सम्बन्धित कार्य ।
सीमान्त	:	दो राज्यों को विभाजित करने वाला क्षेत्र ।
सीमारेखा	:	दो राज्यों को विभाजित करने वाली. रेखा ।
उद्भव क्षेत्र	:	राज्य का सबसे अधिक महत्वपूर्ण क्षेत्र ।
आर्थिक सम्बन्ध	:	राज्यों के बीच आपसी व्यापार का ज्ञान ।
राष्ट्र––परिकल्पना	:	राज्यों की सांस्कृतिक एवं भावनात्मक एकता की विचारधारा ।

राज्य विचार : किसी भी राज्य के अस्तित्व के मजबत करने के कारणो की वियाख्या।

2.10 संदर्भ ग्रन्थ

1. डॉ. हरि मोहन सक्सेना राजनीतिक : राजनीतिक भूगोल रस्तोगी पब्लिकेशन्स शिवाजी रोड, मेरठ 1998
2. डॉ. पी.आर चौहान : राजनीतिक भूगोल वसुन्धरा प्रकाशन, गोरखपुर 2001
3. R.D.Dikshit : Political Geogrophy : Tata McGraw Hill Pub Co New Delhi : 2002
4. Prescott JRV : Political Geogrophy : Methuen & Co .London 1972
5. PeterTaylor : Political Geogrophy : Longman,London : 1984
6. B.L. Sukhwal : Modern Political Geogrophy : of India : Sterling New Delhi :1985
7. C.L.Stoz : Elements of Political Geogrophy : Prentic Hall of India ,New Delhi
8. R.Muir : Modern Political Geogrophy : McMillan London 1981
9. De Bliz Harms J : Systematic Political Geogrophy John Wiley Newyork : 1986
10. 10 S.V. Valkanburg & C.L.stlz : Elements Political Geogrophy : Prentice Hall 1962
11. 11. J.F.Horration : An Outline of Political Geogrophy : Afferd A Knob,new York

2.11 बोध प्रश्नों के उतर

बोध प्रश्न - 1

1. 6 है
2. 5 भागों में
3. ज्योग्राफी बिहाइन्ड पोलीटिक्स ।
4. संयुक्त राज्य' अमेरिका का ।
5. ह्रिट्लसी डरवेन्ट ।

6. रिचार्ड हार्टशोर्न ।

बोध प्रश्न – 2

1. हार्टशोर्न, जोन्स व ह्रिट्लसी ।
2. रिचार्ड हार्टशोर्न ।
3. रेटजेल का ।
4. राष्ट्रीय राजधानी के आसपास ।
5. रेटजेल ।
6. नेपाल ।

बोध प्रश्न – 3

1. स्टीफन वी. जोन्स ।
2. कोहेन और रोसेथल ने सन् 1971 में ।
3. बंगला देश की ।
4. फ्रांस
5. रिचार्ड हार्टशोर्न ।
6. संयुक्त राज्य अमेरिका की ।
7. केन्द्रोप्रसारी व केन्द्रवर्ती शक्तियाँ ।

2.12 अभ्यासार्थ प्रश्न

1. राजनीतिक भूगोल के अध्ययन दृष्टिकोणें पर एक लेख लिखिए ।
2. राजनीतिक भूगोल में शक्ति विश्लेषण दृष्टिकोण की विस्तृत कीजिए ।
3. राजनीतिक भूगोल के कार्य सम्बन्धी दृष्टिकोण की सविस्तार व्याख्या कीजिए :
4. क्षेत्र एकरूपता सिद्धान्त का राजनीतिक भूगोल में महत्व बताइये ।
5. तन्त्र उपागम दृष्टिकोण का सविस्तार वर्णन कीजिए ।
6. बंगला देश के उद्भव का विश्लेषण क्षेत्र एकरूपता सिद्धान्त के संदर्भ में –कीजिये ।
7. राजनीतिक भूगोल में ऐतिहासिक दृष्टिकोण तथा संरचना सम्बन्धी दृष्टिकोण को सविस्तार समझाइये ।
8. राजनीति भूगोल के पठन'—पाठन के नजरिये का विस्तृत –वर्णन कीजिए ।